International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 12 No.3 Jan-Feb 2025

संत कबीरदास जी का हिंदी साहित्य में योगदान

प्रियंका पांडुरंग हजारे
एम.ए.हिंदी, मोरेश्वर आर्ट्स अँड कॉमर्स कॉलेज गंगामसला
Corresponding Author: प्रियंका पांडुरंग हजारे
DOI- 10.5281/zenodo.14988719

प्रस्तावना-

संत कबीर दास ने हिंदी साहित्य में समाज सुधारक ,मानवता की सेवा और भक्ति के क्षेत्र में अहम योगदान दिया है। उनके दोहे, साखियां और रमैनिया भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर है। कबीर दास के साहित्य का प्रभाव आज भी देखा जा सकता है। कबीर दास का जन्म 1398 ई में उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर में हुआ। उनके जन्म को लेकर कई कथाएं प्रचलित है। लेकिन व्यापक मान्यता यह है कि उनका जन्म एक ब्राह्मण विधवा के गर्भ से हुआ। जिन्हें बाद में नीरू और नीमा नामक दम्पत्तियोने अपनाया। कबीर का जीवन आध्यात्मिक और सामाजिक चेतना से परिपूर्ण था। उनका पालन पोषण मुस्लिम परिवेश में हुआ लेकिन उन्होंने हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मियों की रूढीओ और अंधविश्वासों का खड़ा विरोध किया। कबीर जी ने विवाह भी किया था। उनके दो बच्चे थे। संत कबीर जी के जीवन में उनके शिष्य रामानंद का मिलना उनके जीवन में नवीन अध्याय की शुरुआत थी। संत कबीर जी ज्यादातर समय काशी क्षेत्र में ही रहे, परंतु अपने जीवन के कुछ साल में उत्तर प्रदेश और राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में ठहरे हुए थे। उनका निधन 1518 ई में मगहर में हुआ। जो उत्तर प्रदेश के संत कबीर नगर जिले में स्थित है।

कबीर दास जी की साहित्यिक रचनाएं-

संत कबीर दास जी ने अपने जीवन में बहुत सारी महत्वपूर्ण रचनाएं रची है। उसका समाज पर प्रभाव आज भी हमें दिखाई पड़ता है। उनका हिंदी साहित्य क्षेत्र में योगदान व्यापक और महत्वपूर्ण है। कबीर जी ने समाज में व्याप्त बुराइयों, आडंबरों और धर्म के नाम पर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध अपने दोहा और साखियां के माध्यम से आवाज उठाई। संत कबीर दास जी का साहित्य अत्यंत सरल और स्पष्ट था। उनके साहित्य को अनपढ़ आदमी भी स्पष्ट रूप से समझ सकता था। उनके साहित्य की ऐक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी थी कि वह लोकभाषा में लिखा गया था। कबीर दास के साहित्यिक योगदान को मुख्य उनके दोहों, साखियां और रमिनियों में विभाजित किया गया है।

दोहा-

हिंदी साहित्य में संत कबीर जी के दोहे अत्यंत प्रसिद्ध है। इस दोहे से जन मानस के बीच जीवन के गुढ सत्य, नैतिक मूल्यों और व्यवहारिक ज्ञान को सरल भाषा में प्रस्तुत करता है। कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे उन्होंने अपनी वाणी से स्वयं ही कहा है

"मासि कागज छियो नहीं, कलम गऐ नहीं हाय"

इसका मतलब यह है कि संत कबीर दास पढ़े-लिखे नहीं थे। इसके पश्चात भी उनकी वाणी से कह गए अनमोल वचनों के संग्रह रूप का कई प्रमुख ग्रंथो में उल्लेख मिलता है। ऐसा माना जाता है बाद में उनके शिष्यों ने उनके वचनों का संग्रह 'बीजक' में किया। संत कबीर जी को भाषा का ज्ञान नहीं था। वे साधु संतों के साथ कई जगह भ्रमणपर जाते रहते थे। इसलिए उन्हें कई भाषाओं का ज्ञान हो गया था। इसके साथ ही कबीर अपने विचारों और अनुभव को व्यक्त करने के लिए स्थानिक भाषा के शब्दों का इस्तेमाल करते थे। जिसे स्थानिक लोग उनके वचनों को भली-भांति समझते थे। कबीर जी की भाषा को साधुक्कडी भी कहा जाता है।

"माटी कहे कुमार से, तू क्या रोंदे मोहे। एक दिन ऐसा आएगा, मैं रोदूंगी तोए।।"

"चलती चक्की देख के, दिया कबीरा रोए। दो पाटन के बीच में, सबूत बचाना कोई।।"

साखी-

साखी के माध्यम से कबीर दास ने धार्मिक पाखंड, जातिगत भेदभाव और आडंबर पर कड़ा आघात किया। उन्होंने साखियां में ईश्वर की भक्ति, आत्मज्ञान और सत्य की महिमा का गुणगान किया है। कबीर की साखियां ईश्वर प्रेम

के महत्व को बताने वाली रचना है। इन साखियों में कबीर दास जी का ध्यान आडंबरों से भरे मनुष्याता और सभी धर्म के अंदर से महत्व को बताया है। कि साखियां से जुड़ी कुछ बातें आधुनिक देसी भाषा में विशेषता हिंदी निर्गुण संतों में साखियो का व्यापक प्रचार निसंदेह कबीर दास जी द्वारा किया गया है। गुरु वचन और संसार के व्यावहारिक ज्ञान को देने वाली रचनाएं साखी नाम से अभिहित होने लगी। कबीर ने कहा भी है 'साखी आखिर ज्ञान की' कबीर के पूर्ववती संत नामदेव की साखी नामक हस्तलिखित प्रति मिली है। परंतु उसका संकलन उत्तर भारत में संभवता पंजाब यहां हुआ होगा, क्योंकि महाराष्ट्र के नामदेव वाणी,पद या अभंग ही कहलाती है साखी नहीं।

"ऐसी बानी बोलिए, मन का आप कोई। आपन तन शीतल करे, औरन को सुख होय।।''

"पोती पड़ी पड़ी जग मुआ पंडित न कोय । एके अषिर पिव का , पढै सु पंडित होइ।।"

रमैणी-

संत कबीर दास जी ने अपने विचारों को रमैनी के माध्यम से भी व्यक्त किया। रमैनी एक प्रकार का गीत काव्य है। जिसमें कबीर की आत्मीय अनुभव, अनुभूतियों का वर्णन मिलता है। कबीर दास का साहित्य समाज सुधार और मानवता की सेवा का संदेश देता है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त अंधविश्वास, पाखंड और जात-पात के भेदभाव को मिटाने का प्रयास किया। उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है। और समाज को दिया गया वरदान है।संत कबीर जी का साहित्य समाज को दिशा प्रदान करता है। कबीर दास ने भक्ति आंदोलन को नए आयाम दिया। उनके दोहे, साखियां और रमैणी भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर है। रमैनी संत कबीर दास की एक रचना है। यह चौपाई छंद में लिखी गई है। रमैनी कबीर के बीजक की प्रस्तावना है। इसमें चौरेऐशी पद है। हर पद में अलग विचार है। रमैनी में कबीर ने हिंदू और मुस्लिम दोनों को एक जैसी धार्मिक शिक्षा दी है।

निष्कर्ष-

संत कबीर जी का साहित्य आज भी समाज को दिशा देने का कार्य करता है। उनके साहित्य में जो बातें उन्होंने कही है,भी आज सच हो रही है। उनके साहित्य से समाज में बहुत बड़ा परिवर्तन हो रहा है और होता रहेगा। उनकी रचनाएं आज भी तरोताजा लगती है। क्योंकि उनकी रचनाओं में सामान्य मनुष्य को अपनी समस्याओं का हल मिलता है। संत कबीर जी की रचनाये हिंदी साहित्य को बहुत लाभदायक रही है। जब-जब हिंदी साहित्य के योगदान बात आएगी तब तब संत कबीर जी का नाम निर्गुण भक्ति साहित्य में सबसे ऊपर होगा। उनकी रचनाओं में से समाज को मिली शिक्षा निरंतर चलती रहेगी ।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

१) बीजक ग्रंथ (सं. स्वामी श्री हनुमानदास जी साहब षटशास्त्री);

२) **कबीर** साहब का बीजक ग्रंथ (सं.पं. मोतीदास जी चेतनदास जी)

३) डॉ॰ ताराचंद : इन्फ़्लूएंस ऑव इस्लाम ऑन इंडियन कल्चर।

४) द्विवेदी, हजारीप्रसाद कबीर, 1990 (हिन्दी), भारतडिस्कवरी पुस्तकालय: राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

५) साखी आँखी ज्ञान की, समुझि देखु मन माहि। विन साखी संसार कौ,झगरा छूटत नाहि॥ साखी, 369

६) चयपिद, 27-2;17-। देखिए; पृष्ठ 124 का दोहा भी देखिए।

७) ('तु. क. ग्रं'., परिश्ष्ट, पद 126, पृष्ठ 301)

८) सदा नादानुसंधानात् क्षीयंते पापसंचय:। निरंजने विलीयेते निश्चितं चित्त-मारुतौ।।-'हठयोगप्रदीपिका, पाणिनी ऑफ़िस, इलाहाबाद, 1915', 4-10